

# अर्थशास्त्र सिद्धान्त का विकास

अलेग्जेंडर प्रेड

# अर्थशास्त्र सिद्धान्त का विकास

अलेग्जेंडर ग्रे



एस० चन्द एण्ड कम्पनी  
दिल्ली - जालन्धर - लखनऊ

# अर्थशास्त्र सिद्धान्त का विकास

(एक परिचयात्मक परिमाण)

*(The Development of Economic Doctrine)*

लेखक -

अलैंगर्जेंडर ग्रे, एम० ए०

राजनीतिक अर्थशास्त्र के उपाध्याय

ऐडिनबरा विश्वविद्यालय

अनुवादक

विराज, एम० ए०

एस० चन्द एण्ड कम्पनी

दिल्ली—जालन्धर—लखनऊ

*This Hindi translation of the Development of  
Economic Doctrins by Alexander Gray is  
Published in India by S. Chand & Co.,  
Fountain, Delhi by arrangements  
with M/S. Longmans, Green  
and Co. Ltd., London.*

एस० चन्द एण्ड कम्पनी  
भासफमली रोड नई दिल्ली  
फव्वारा दिल्ली  
भाईहीरा गेट जालन्धर  
लालबाग लखनऊ

मूल्य ७।।)

मुद्रक  
इण्डिया प्रिंटर्स  
दिल्ली-६

## भूमिका

प्रयागों और परम्पराओं का यह ग्राम सातकाजा है कि लेखक—कम से कम ऐसी पुस्तक का लेखक, जो कि पाठ्य-पुस्तक-सी दिखाई पड़ती है—इस बात के लिए कुछ समुचित क्षमा याचना करे कि उसने पुस्तकों के संसार में विद्यमान मार्ग और उपलब्धि के भयानक और उद्वेजक विषम अनुपात को और भी अधिक विषम कर दिया है और साथ ही उसे आलोचकों तथा अन्य लोगों के भले के लिए यह भी बतला देना चाहिये कि आखिर वह कौनसा चिर-अनुभूत अभाव था, जिसकी पूर्ति लेखक के विचार में उसकी पुस्तक द्वारा होने लगी है। इस पुस्तक का उद्देश्य बहुत ही सीमित है। इसके शीर्षक के सबसे महत्त्वपूर्ण शब्द से यह सूचित हो जाता है कि यह एक परिचयात्मक ग्रन्थ है और परिचयात्मक ग्रन्थ का सारभूत गुण यह होता है कि वह केवल ज्ञान के प्रारम्भ का प्रतीक होना चाहिये। सामाजिक जीवन की भाँति विद्याध्ययन में भी परिचय पूर्ण अज्ञान की स्थिति से आगे की और पहली मंजिल की अपेक्षा कुछ अधिक नहीं होता, बहुत सी बातें बाद में जानने के लिए छोड़ दी जाती हैं, और आश्चर्यजनक बातों को सम्भावना निरन्तर बनी रहती है।

इसके अनुसार ही यह पुस्तक प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है, और इसका उपयोग अर्थशास्त्र की उन असंख्य पाठ्य-पुस्तकों में से किन्हीं के भी साथ हो सकता है, जो अध्ययन या अध्यापन के लिए चुनी जाय। मेरा अपना अनुभव यह है कि प्रचलित और सर्वस्वीकृत सिद्धान्त का प्रतिपादन तब और भी अधिक रोचक एवं ग्राह्य बन जाता है, जब उसके साथ-साथ उस विचार या सम्मति के विकास के इतिहास पर भी एक दृष्टि डाल ली जाय। यदि यह सत्य हो कि अर्थशास्त्र के अध्यापन के लिए व्यापारवादियों, प्रकृतिवादियों, स्मिथ, माल्थस, लिस्ट तथा अन्य बड़े-बड़े अनेक लेखकों के सिद्धान्तों का निरन्तर उल्लेख करते रहने की आवश्यकता पड़ती है तो कालेज के प्रथम वर्ष के विद्यार्थी के पास भी एक ऐसी पुस्तक का रहना उचित है, जिसमें वे बातें हों, जिन्हें कि वह अर्थशास्त्र सिद्धान्त के विकास के विषय में

जानना चाहता है। अन्य सब पुस्तकों के प्रति पूर्ण आदर रखते हुए, यह है वह अभाव, जिसकी पूर्ति करने के प्रयोजन से इस पुस्तक की रचना की गई है।

क्योंकि, एक दृष्टि से, अर्थशास्त्र सिद्धान्त के इतिहास पर इस समय प्राप्त होने वाली पुस्तकें सामान्य विद्यार्थी की दृष्टि से बहुत अधिक भरी हुई, बहुत अधिक सर्वांगसम्पूर्ण—कहना चाहिये कि बहुत अधिक अच्छी—हैं, भले ही वे उस विद्यार्थी के लिए कितनी ही उपयोगी क्यों न हों, जो अर्थशास्त्र का विशेष रूप से अध्ययन कर रहा है। यदि किसी प्रारम्भिक विद्यार्थी को हर किसी विद्वान के बारे में कुछ न कुछ बात बताई जाने लगे, या उसे यह समझाया जाने लगे कि श्रोटेस और जुस्टी उल्लेखनीय विद्वान हैं, तो वह बेचारा धपले में ही पड़ जाता है। श्रोटेस और जुस्टी चाहे कितने ही महत्त्वपूर्ण क्यों न हों, किन्तु उनकी स्थिति ऐसी है कि वे बड़ी आसानी से कुछ देर प्रतीक्षा करते रह सकते हैं। दूसरी ओर, जब प्रारम्भिक विद्यार्थी की दिलचस्पी जाग उठती है, तो वह चाहता है कि उसे इस इतिहास का काफी कुछ सम्पूर्ण—सा चित्र प्राप्त हो जाय। और शिक्षण की दृष्टि से यह कहीं अधिक अच्छा है कि उसे बड़े-बड़े सीमा-चिह्नों का काफी अच्छा ज्ञान हो जाय, भले ही अन्य क्षेत्रों में उसके अन्धी अज्ञान को हटाने के लिए कुछ भी प्रयत्न न किया जा सके, बजाय इसके कि उसे बहुत विस्तृत क्षेत्र का अस्पष्ट और अपमिश्रित (कन्फ्यूस) सा ज्ञान करा दिया जाय।

इसलिए इस पुस्तक में केवल प्रारम्भिक विद्यार्थी को दृष्टि में रखते हुए मैंने जहाँ तक भी व्यवहार्य हुआ, यह यत्न किया है कि इस पुस्तक में किसी भी लेखक का तब तक उल्लेख न किया जाय, जब तक कि मैं उसके बारे में सुबोध रूप से यह लिखने के लिए स्थान न निकाल सकूँ कि वह किस विशेष विचार का प्रतिनिधि था। इसके अनुसार ही मैं चुनाव करने और सान्द्रता बनाये रखने की प्रक्रिया को लेकर भागे बढ़ा हूँ और अनेक जगह मुझे कठोरतापूर्वक काफी महत्त्वपूर्ण लेखकों को भी एक ओर धकेल देना पड़ा है। इस प्रकार मध्य युग के सम्बन्ध में विचार करते हुए मैंने जाम-बूझकर ही उस विवेचन को सेंट थामस एक्वाइनास तक ही सीमित रखा है। इसी प्रकार ल्यूगों के मामूली से उल्लेख को छोड़कर प्रकृतिवादियों का सारा भार मैंने क्वेसने के सिर पर

हाल दिया है। इसी प्रकार बाद के कालों के विवेचन में भी मैंने अपने आपको केवल उन्हीं लेखकों तक सीमित रखा है, जिनके साथ प्रारम्भिक विद्यार्थी का सबसे अधिक वास्ता पड़ना है।

परन्तु ऐसी कठोरता करने में अनेक बार मुझे बहुत मनोव्यथा भी हुई है। मैं कुलोच तथा ज्येष्ठ मिल के नामों की उल्लेख करते हुए वस्तुतः मुझे कोई क्लेश नहीं हुआ। यहाँ तक कि जर्मन इतिहासिक विचारक वर्ग को छोड़ते हुए भी मुझे विशेष अनुभव नहीं हुआ। "पद्धति" के सम्बन्ध में वह पुराना विवाद अब उतना महत्त्वपूर्ण प्रतीत नहीं होता, जितना कि अब से एक पीढ़ी पहले अनुभव होता था। और इस महत्त्व के घट जाने के कारण उस विवाद के नेताओं की ओर ध्यान देने की आवश्यकता भी कम और कम होती जाती प्रतीत होती है। परन्तु मैं कॅन्टिलीन को अवश्य प्रस्तुत करना चाहता था, जो शायद तब तक अपने असली रूप में और भी अच्छी तरह सामने आ जाये, जबकि उसकी पुस्तक का प्रतिज्ञात दूसरा संस्करण सुलभ हो जायगा। देश-प्रेम की भावनाओं से प्रेरित होकर जोन ला के सम्बन्ध में भी लिखना चाहता था, जिसे कि विदेशों में अर्थशास्त्री के रूप में कहीं अधिक आदर प्राप्त है, जब कि उसके अपने देश इंग्लैंड में उसे वह आदर प्राप्त नहीं और वहाँ उसे केवल एक बड़ा पैसे वाला आदमी समझा जाता रहा है। इसी प्रकार मुझे अपनी पुस्तक में फूर्नों का वर्णन करने में भी प्रसन्नता होती, जो अंकगणितीय अर्थशास्त्रियों की एक सुदीर्घ परम्परा का जन्मदाता था। परन्तु अन्य सब छोटे जहाजों की भाँति पाठ्य-पुस्तक की भी एक प्लिमसोल रेखा (जहाज पर बनी वह रेखा, जिसके पानी की सतह तक आ जाने के बाद जहाज पर और माल न लादा जाना चाहिये) होती है, अत्यधिक भार के कारण डूब जाने की चेतावनियों को ध्यान में रखते हुए इन तथा अन्य अनेक कीमती गाँठों को पीछे बन्दरगाह पर ही छोड़ देना पड़ा है। अपनी इस नीति के कारण कि मैं कठोरतापूर्वक अनेक लेखकों को छोड़ता गया हूँ, जिससे कि जो लेखक इसमें लिये गये हैं, उनका अपेक्षाकृत पूरा विवेचन हो सके, मैं अपने आपको यह कहकर सन्तोष दे सकता हूँ कि अर्थशास्त्र का सिद्धान्त का इतिहास कहलाने का दावा करने वाली अन्य किसी छपी पुस्तक में इतने अधिक महत्त्वपूर्ण नाम बिलकुल बिना उल्लेख किये नहीं छूट गये होंगे।

इस बात के प्रमाण सब ओर दिखाई पड़ रहे हैं कि अंग्रेजीभाषी देशों में अर्थशास्त्र सिद्धान्त के इतिहास के अध्ययन की ओर अब उसकी अपेक्षा कहीं अधिक ध्यान दिया जा रहा है, जितना कि इससे पहली पीढ़ी ने दिया था। मुझे यह सोचकर प्रसन्नता होगी कि सम्भव है कि मेरी यह छोटी सी पुस्तक उस मनोवृत्ति को प्रोत्साहित कर सके, जिसे मैं एक प्रशंसनीय प्रवृत्ति समझता हूँ और इस प्रकार होने तथा गाइड और रिस्ट की अपेक्षाकृत सर्वांगसम्पूर्ण रचनाओं के अध्ययन के लिए सोपान-बिाला का काम दे सके।

मैरिस्कल कालेज

अलैंगज़ंडर प्रे

ऐबरडीन

मार्च १९३१

## द्वितीय मुद्रण के लिए लेखक की टिप्पणी

इस पुस्तक के पुनर्मुद्रण के अवसर पर मैं इस विषय के साहित्य से सम्बद्ध तीन घटनाओं का उल्लेख कर देना चाहता हूँ। पहली बात तो यह है कि कातिवों, जिसका उल्लेख भूमिका में किया जा चुका है, की पुस्तक 'ऐसे स्यूर ला नेत्यूर वु कामर्स ए जनराल,' (सामान्य रूप से वाणिज्य का प्रकृति के विषय में निबन्ध) अब मैकमिलन एण्ड कम्पनी द्वारा रॉयल इकनामिक सोसाइटी के निमित्त प्रकाशित की जा चुकी है। दूसरी बात यह है कि सुरान्धी उनगर, जिसका उल्लेख पृष्ठ ३७४ पर किया गया, की पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद अब सुलभ हो गया है जिसका नाम है इकानामिक्स इन दि ट्वंटीथ सेंचुरी (बीसवीं शताब्दी में अर्थशास्त्र की स्थिति)। तीसरी बात यह है कि अर्थशास्त्र सिद्धान्त के इतिहास के विषय में एक विशाल और विस्तृत ग्रन्थ, जिसका शीर्षक *Theoretisch-historische Inleiding tot de Economie* है और जिसके लेखक श्री ऐच० डब्लू० सी० बोर्डेविज्क हैं, डच भाषा में प्रकाशित हुआ है। इस पुस्तक में मुख्य रूप से व्यापारवादियों, प्रकृतिवादियों और क्लासिकल (प्राचीन) विचारक वर्ग का वर्णन किया गया है।

अप्रैल १९३३

अलैंगज़ंडर प्रे



## विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१. यूनान और रोम ...	१
२. मध्ययुग—सेंट थामस ऐक्वाइनास—ग्रोररुमे ...	३३
३. व्यापारवाद ...	६३
४. प्रकृतिवादी विचारक—क्वेसने और टर्गेट ...	६६
५. ऐडम स्मिथ ...	१०६
६. माल्थस और रिफार्डो ...	१६५
७. लाडवेल, रे और सिसमोन्दी ...	२०५
८. मुल्सर, लिस्ट और वान थुन ...	२३६
९. आशावादी विचारक : केरी और बैस्त्रियात ...	२७३
१०. प्राचीन परम्परा : से, सीनियर, जेम्स स्टुमर्ट मिल और केर्नीज ...	२६४
११. कार्ल मानस ...	३२६
१२. आस्ट्रियन विचारक वर्ग : स्त्रीमान्त का सिद्धान्त उपसंहार ...	३६६
भाग्य अध्ययन के लिये टिप्पणियाँ ...	४०६
	४१७

“सम्भवतः राजनीतिक अर्थशास्त्र ही एक ऐसा विज्ञान है, जिसके विषय में यह कहा जा सकता है कि इसका अज्ञान केवल शुंभ से बंचित रहना भर ही नहीं है, अपितु उससे घोर भावात्मक अशुभ की भी उत्पत्ति होती है।”

—रेवरेंड टी० आर० माल्थस

“राजनीतिक अर्थशास्त्र.....एक विज्ञान है, किन्तु साथ ही यह बहुत खतरनाक है और यह पाप के अघसरों की ओर ले जाने वाला भी है।”

—कार्डिनल न्यूमेन

। “मार्शल भला करने के लिए आवश्यकता से अधिक अधीर था।”

—जे० एम० फील्स